Reviews of Literature
Impact Factor : 1.4716 (UIF)
Volume 2 , Issue 5 / Dec 2014 ISSN:-2347-2723

ख्वाजा बंदेनवाज (गेसूदराज) की कुछ दक्खिनी रचनाओं का सामान्य परिचय तथा अर्थ

शेख शहेनाज अहेमद

हिंदी विभागाध्यक्ष , हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय हिमायतनगर, ता.हिमायतनगर, जि.नांदेड

सारांश-

'ख्वाजा बंदेनवाज' इनका मूल नाम नही है। बचपन से ही सर्वसामान्य व्यक्तियों के प्रति इनके मन में जो अपनत्व और ईश्वर के प्रति अगाध श्रध्दा रही इसी कारण उन्हें यह नाम दिया गया है। इतना ही नही इस्लाम के शवाल महिने के बाद जो जिल्कद का महिना आता है, जिसमें बंदेनवाज की मृत्यु हुई उस महिने को संपूर्ण दक्खिनी विभाग और महाराष्ट्र के मराठवाडा में उन्ही के नाम से उस महिने को बताया जाता है यानी 'बंदेनवाज का महिना' यहाँ के लो 'जिल्काद' को 'जिल्काद' न कहकर 'बंदेनवाज' कहते है। इसी महिने में गुलबर्गा में बंदेनवाज का उर्स शरीफ और संदल होता है।

प्रस्तावना-

बंदेनवाज 'गेसूदराज' की बहुत सारी रचनाएँ है, जिनमें वे अरबी, फारसी और दक्खिनी में लिखी हुई है। बंदेनवाज गुलबर्गा आने के बाद इनके सामने सबसे बड़ी समस्या भाषा की थी। यहाँ के लोग अरबी और फारसी ठीक तरह से समझ नही पाते थे। कुछ गिने-चुने तबके के लोगों ही अरबी-फारसी का ज्ञान था। गेसूदराज के पास नीचले तबके के लोग ही ज्यादा आते थे और उन्हे ही यह अरबी-फारसी समझ में नही आती थी। इन लोगों के साथ आपसी आदान-प्रदान करने के लिए दक्खिनी का जन्म बंदेनवाज के आने के पूर्व ही हो चुका था। दक्खिनी हिंदु-मुसलमानों के बीच संपर्क भाषा का स्थान ले चूकी थी। देवगिरी में ख्वाजा बंदेनवाज १४ वर्ष तक रहेने के कारण उन्हें दक्खिनी का परिचय था। यह भाषा मुसलमानों के परिवार की भाषा बन गयी। राजकीय भाषा फारसी थी। जनसामान्य को समझाने के लिए बंदेनवाज में 'दक्खिनी' भाषा को अपनाया और इसी भाषा में साहित्यिक परंपरा नही थी दार्शनिक शब्दावली नही थी इसका अपना कोई व्याकरण नही था, जो शुध्द लोक भाषा थी। मराठी में लोकभाषा को अपनाने का साहस ज्ञानेश्वर ने किया, हिन्दी में यह कार्य कबीर ने किया तो दक्खिनी में गेसूदराज ने यह कार्य कर दिखाया। इनकी दक्खिनी रचनाओं की सूची बहुत लम्बी है। पर मै यहाँ इनकी कुछ चुनिंदा रचनाओं को ही बताना चाहती हूँ, जो समझने में सरल हो-

१)चक्कीनामा : यह ईश्वरदत्त तन की चक्की है। इसे प्रिय की शरण में जाकर चलाना होगा। इस चक्की को सौकन रुपी इब्लीस इसे खींचकर थक गयी। यहाँ इब्लीस का अर्थ है- 'माया' ऐ ईश्वर मैं तेरा नाम लेकर चला रही हूँ। इस चक्की का दस्ता (यानी खूँटा) अल्लाह है। अल्लाह और मेरे बीच इस चक्की की, अनी (म्यानी) मुहम्मद है। हमारे अंदर उसे पाने की चाह हो तो ही वह दिख सकता है। दाने-चुन चुनकर लेने पडेंगे। हर्षित हाथों से दानों को लाओं। शरीअत (कर्मकांड) से इसे चलाओ। अल्लाह को गुरु द्वारा ही जाना जा सकता है। इस चक्की से पीसा हुआ आटा छान लो। व्यक्ति के अस्तित्व को बर्तन की तरह होना चाहिए। इस बर्तन को पश्चाताप रुपी प्रक्रिया से तथा ईश के नामस्मरण रुपी पानी से धोना होगा। आटा पीसो, पूरन भरो, बहिश्त रुपी मेवा प्राप्त करो, सात गुणों का पूरन भरो।

इज्राईल (थानी यमराज) की कढ़ाई चढ़ाओ। उसमें इन्हें छोड़ो। लकडियाँ चुन-चुन लाओ। उपर्युक्त वस्तुएँ इस कढ़ाई में छोड़ने के बाद तलने की आवाज निकलेगी। इससे तू पूर्ण मार्ग से दूर चला जाएगा। तुझमें नफ्स अम्मारा (दुष्ट आत्मा) का उदय होगा, ऐसे समय में तू प्रिय की शरण में जा। नफ्स अम्मारा को छोड़े बिना नूर (दिव्य तेज) तुम्हारे दिलों में उतरेगा नही। सभी कार्यो में तू ईश्वर को ऐसा ही देख जैसे ख्वाजा बन्दानवाज बन्दाहुसैनी गेसूदराज सदा उसी की बंदगी में रहते है।

अर्थात बंदेनवाज ने स्त्रियों में अध्यात्म के प्रति अंधश्रध्दा तथा अज्ञान को दूर करने के हेतू उनके लिए कविताएँ लिखी है। उन्होंने स्त्रियों के सुधार पर जोर दिया है। इस कविता में उन्होंने चक्की, उससे जुड़ी हुई वस्तुएँ, आटा आदि के द्वारा ईश्वर की ओर जाने का मार्ग सुझाया है। ईश्वर प्राप्ति में जो बात रुकावट बनकर जाती है जिसे नफ्स अम्मारा कहा गया है। उसकी ओर भी संकेत किया है। दैनंदिन वस्तूओं के माध्यम से अध्यात्म तत्व को बंदेनवाज ने समझाने का सफल प्रयत्न किया है। जैसे-

'देखो वाजिब तन की चक्की।
पीव चातुर हो के सक्की।।
सौंकन इब्लीस खींच-खिंच थकी।
के या बिसमिल्ला हु हु अल्लाहु।।

अवल इज्राइल कढ़ाई चढ़वो।
मटका? कहे इसे भा देना।।
लकड्याँ चुन-चुन लावो।'[१]

२)ग़ज़ल (भावगीत) : ग़ज़ल जैसी लोकप्रिय शैली से बंदेनवाज ने भक्त को विषय वासना से दूर रहने का उपदेश दिया है। वैसे तो ग़ज़ल के माध्यम से केवल प्रिय-प्रियतमा की ही बाते कही जाती है। इसका केंद्रिय विषय इश्क होता है। यहाँ पर भी इश्क की बात कही गयी है, पर यह इश्क अध्यात्मिक है। इसमे ऐंद्रिय सुख को घोड़े का रुपक देकर संपूर्ण सांग रुपक की सृष्टि यहाँ की गयी है। इस घोड़े को अपने निमंत्रण में लाने का मार्ग सुझाया है। जैसे-

''तूं तो सही है लश्करी कर नफ्स घोड़ा सार तूं।
होवे नर्म न, तुझ ओ चड़े, पस खाएगा आजार तू।।''[२]

३)रुबाई (चौपाई) : रुबाई में गेसूदराज अद्वैत दर्शन को समझाने का प्रयत्न किया है। पानी में नमक डालकर जब उसे देखते है-तब नमक पानी में घूल जाता है। ऐसे समय नमक का अलग अस्तित्व कहाँ रह जाता है। ठीक इसी प्रकार साधक स्वयं (खुद) को (अपने अहम को) खुदा और नबी के दिव्य तेज में पूरी तरह से विलीन कर दे। खुदी जब घुल गई तो खुदा बोले किसे? जैसे-

''पानी में नमक डाल लेसां देखना इसे।
जब घुल गया तो नमक बोलना किसे।।
यों बोले खुदी अपना खुदा साथ मुस्तफा।
जब घुल गई खुदी तो खुदा बोलना किसे।।''[३]

आवो साजन, हम आपसे मेल करना चाहते है। ऐ साहब। और ऐ सहेली! मै क्या करुँ मन में तो मिलन की उत्कट इच्छा है।

आओ प्यार करें, अपने प्यारे मुहम्मद से प्यार करें। हाँ, हाँ उसी मुहम्मद से जो सबका वाली है। आओ प्यारे दया करना हम पर, ओ प्यारे। मैं तुझसे मिलना चाहता हूँ। मैं अपने आप को जान रहा हूँ और यही खुदा के पाने की शक्ति है।

बकरी जब में-मे (मैं-मैं : व्यक्ति का अहम) करती है तब उसका गला कटता है। मृत्यु की प्राप्ति। मेंना जब मैं-ना (मैं कुछ भी नही, अहम का विलय) कहती (करती) है, तब सबके मन को भाती है। तात्पर्य ईश्वर प्राप्ति के लिए अहम् का विलय आवश्यक है। जैसे-

बकरी जौ में में करे। गले छुरी फिरवाये।।
मैंना जो मै-न कहे। सबके मन को भाये।।
मुसलमान होना न्हन्नी बात नै।
मुसलमाँ होता है लाखों में कुई।।[४]

४)हकीक़ख रामकली : इसमें वजूद (अस्तित्व) को हकीकत मुतलक (ईश्वर) का बुरका तसब्बुर यिा गया है। इस कविता में गेसूदराज ने अपने गुरु का नाम लेकर उल्लेख किया है, जिससे, इसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है। वे कहते है- जैसे-

''मै आशिक उस पीव का इन्ने मुझे जीव दिया है।
ओ पीव मेरे जीव का बुरका लिया है।।
ओ माशूक बे मिशाल नूर नबी पाया।
और नूर नबी रसूल का मेरे जीव में भाया।।''[५]

जिस ईश्वर ने मुझे जीव (आत्मा, जन्म) दिया है उस पर ही मैं आशिक हूँ। उस प्रिय ने मेरे जीव (शरीर) का बुरका धारण किया है। (अर्थात वह और मै एक है। वह मुझमें, मैं उसमें हूँ।)

उस प्रियतम के अवर्णनीय सौंदर्य को नबी ने पाया है और उस नबी का दिव्य तेज मेरे जीव में आया है। इस कारण उस ईश्वर को देखने के लिए आईने की क्या जरुरत? खुद को खुद में ही देखने की स्थिती है। ऐसे जीव को जो खुद में ही जीव को देख रहा है उसे कोई नही देख सकता। जो अपने में उसको देखता है उसे और चीजें अच्छी नही लगती। संसार की सभी वस्तुएँ उसी की पहचान है। जो कोई उस आशिक के पीव है वे इसी जीव में उसे जान सकते है। उसे देखकर जीव पूर्णतः खो जाता है। जैसे मै उस पर दीवाना हो चुका हूँ।

ख्वाजा नसीरुद्दीन ने ईश्वर को अपना प्रिय बनाया है। जीव का घूँघट खोलकर उसे उसका मुख दिखलाया है। बंदानवाज कहते है-'प्रिय संग का यह अनुभव व्यक्त नही किया जा सकता।'

५)नआत (प्रेषित-प्रशंसा) : ऐ मुहम्मद! आप का जलवा भरपूर रहे। आप की सत्ता (जात) से समस्त संसार प्रकाशमान है (होगा)। (अल्लाहू नुरुस्समावाति वला) अर्थात अल्लाह समस्त ब्रह्मांड का तेज है। हुजूर (सल) के ईशदि के अनुसार 'अना मिन नुरील्लाहि' अर्थात् मैं अल्लाह के नूर (ज्योति) से उत्पन्न हूँ। 'मिन कुल्ले राय्यीन नूरी' अर्थात् मेरा नूर (प्रकाश) ब्रह्मांड के प्रत्येक अणु-रेणु में है। सजीव तथ निर्जीव दोनों प्रकार के पदार्थो में है। जैसे-

''ऐ मोहम्मद हजलव जम-जम जलवा तेरा।
जाते लजल्ली होय गी सीस सपूरना सिहरा।।''[६]

अल्लाह कहता है कि मैने तुम्हारे लिए (पैगम्बर के लिए) यह समस्त ब्रह्मांड रचा है। संसार के प्रारंभ से आज तक जो भी विद्वान, पंडीत, ज्ञानी, मुनि प्रेषित आदि सजदा। (प्राणिपात) करने वाले जो भी आये वे सब तुझे ही सजदा (वंदन, नमन) करते हुए आये, और मेरी तरफ से तेरी उम्मत(स्वजन समूह) के लिए (रहस्य) रहमत, बख्शिश और हिदायत से आये। गोपनीयता की बात यह है कि जो राज में 'माशूक-ए-इलाही' था (नबी की ओर संकेत है) वह इस भौतिक जीवन में शहबाज कहलाया (जिसकी उड़ान सर्वोच्च होती है) और इश्के हकीकी की मिशाल संसार में चिर प्रस्थापित की।

इस प्रकार बन्दानवाज ने दक्खिनी भाषा के माध्यम से सर्वसामान्य जनता तक अपनी बातें पहुँचाने का कार्य किया है।

संदर्भ -

१.चक्कीनाम : बंदानवाज
२.दक्खिनीगद्य- (शिकारनाम)-बंदानवाज
३.दक्खिनीगद्य-बंदानवाज
४.वही पृ.२८
५.दक्खिनीगद्य-हकीकत रामकली-बंदानवाज
६.दक्खिनीगद्य-कलाम-बंदानवाज
७.गेसूदराज की जीवनी और व्यक्तित्व-एहसानुल क़ादरी